Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, SEPT-OCT, 2021, VOL- 9/67
10.21922/srjis.v9i67.8218

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के अनन्य सखा: वानरराज सुग्रीव

सुमन लता सिंह, Ph. D.

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी० एड० विभाग, खुनखुन जी गर्ल्स पी० जी० कॉलेज, लखनऊ

Email: singhlatasuman@gmail.com

Paper Received On: 21 OCT 2021

Peer Reviewed On: 31 OCT 2021

Published On: 1 NOV 2021

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

आदि कवि वाल्मीकि रचित 'रामायण' श्री रामचरित पर आधारित विश्व का प्रथम महाकाव्य है। त्रैलोक्य पीड़क रावण के संरक्षण में पल्लवित फलित राक्षसी वृत्तियों का समूल नाशकर मानवीय मूल्यों की स्थापना, लोकरञ्जक श्री राम व्रत धारण कर चुके राघवेन्द्र, सानुज लक्ष्मण सहित श्रीराम का समुद्र से चतुर्दिक घिरी लंकानगरी पर आक्रमण का तात्कालिक कारण रावण द्वारा महादेवी सीता का हरण था। बिना वानरराज सुग्रीव की सहायता के न तो सीता-अनुसंधान सम्भव था, न ही समुद्र पर सेतु बाँध वानरों की विशाल सहित रावण की पूरी तरह सुरक्षित लंकापुरी पर आक्रमण ही। मानवीय मूल्यों के संरक्षक तथा सम्वाहक श्री राम ने रावणोन्मूलन में वानरराज के सहयोग के प्रति कृतज्ञता का ज्ञापन बार-बार किया है विस्तार भय से मित्रता की पृष्ठभूमि का उल्लेख करना आवश्यक नहीं प्रतीत हो रहा है। इस आलेख का वर्णन विषय वानरेन्द्र सुग्रीव की लंका के महासमर में प्रदर्शित शौर्यगाथा और रण चातुर्य का रेखांकन मात्र है।

विशुद्ध ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करने पर यह भलीभाँति विदित होता है कि उस समय भारतीय प्रायद्वीप में तीन राजशक्तियाँ विशेष महत्त्वपूर्ण थीं- उदारवर्ती भू भाग में इक्ष्वाकुवंशीय आर्यशक्ति का पुरोधा जहाँ अयोध्या का राजवंश था, वहीं सुदूर दक्षिण में समुद्र में स्थित लंका को केन्द्र बना रावण के संरक्षण और नेतृत्व में राक्षसी शक्ति त्रेल्योक्यपीड़क की विश्वविश्रुत कुख्याति का ध्वजबाहक बनी थी। दोनों के मध्यवर्ती घोर वनाच्छादित भू-भाग में गीध, नाग और वानर संज्ञक मानवसमूहों का शासन था, जिनमें बालिन् के नेतृत्व में रावण का मानमर्दन कर वानरीशक्ति अपनी श्रेष्ठता और सैन्यशक्ति का प्रमाण दे चुकी थी। किन्तु वनप्रान्तर एवं पर्वत श्रेणियों के मध्य भावासित वानरशक्ति विस्तारवाद से सर्वथा दूर अपने स्थानीय संसाधनों पर आश्रित रहकर फल-फूल रही थी। अयोध्या जैसी भव्यपुरी के यशस्वी राजकुमार लक्ष्मण तक वानरों की प्रमुख राजधानी किष्किन्धापुरी की वास्तुकला और वैभव को देखकर आश्चर्यचकित रह गये थे। तारा की विलक्षण तार्किक प्रतिभा से अभिभूत रामानुज को सुग्रीव के सच्चे पश्चातपूर्ण मनोभावों ने पूर्णतया शांतचित्त बना दिया था। सुग्रीव की उपेक्षा के

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कोपाकुल किष्किन्धा पधारे लक्ष्मण वानरराज सुग्रीव की सहायता के प्रति पूर्णतया आश्वस्त और संतुष्ट हो अपने आदरणीय अग्रज श्रीराम के पास लौटे थे।

देवी सीता के अन्वेषण के निमित्त वानर प्रमुखों को चतुर्दिक भेजते समय कपिराज सुग्रीव ने भूमण्डल के प्रमुख स्थानों का जो सजीव और यथार्थ विवरण प्रस्तुत किया था, उससे तो स्वयं श्री राम प्रभु भी विस्मय से भर उठे थे1 । श्री राघव द्वारा पूछे जाने पर 'हरिपुंगव' (श्रेष्ठ वानर पुरुष) ने स्पष्ट किया था कि अपने अग्रज बालि द्वारा देश से निष्कासित होने के पश्चात् इन स्थानों का स्वयं भ्रमण किया था।2

आदिकवि के अनुसार सूर्यपुत्र के रूप में प्रख्यात् सुग्रीव तथा उनके महाप्रतापी अग्रज के पिता का नाम ऋक्षरजस् बताया है। ऋक्षराजा की मृत्यु के उपरान्त वानर सचिवों ने बाली को राजा तथा सुग्रीव को युवराज के पद पर अभिषिक्त किया था।3 महाभारत इनकों सूर्यपुत्र कहता है।4 पुराण बाली और सुग्रीव को किष्किन्धा नगरी के सुविख्यात् वानरराज महेन्द्र एवं उनकी पत्नी ऋक्षरजा का पुत्र बताते हैं।5 यही नहीं प्रचलित मान्यता में एक की वृद्धि करते हुए, पद्मपुराण के पातालखण्ड में सुग्रीव की तीसरी पत्नी का नाम मोहना कहा गया है।

सीता जी के सफल अन्वेषण के पश्चात् हनुमान जी ने देवी जानी को सूचित करते हुए बताया था कि करोड़ों वानरों के परमप्रतापी राजा सुग्रीव, जिनका मैं सचिव हूँ, के बल पर श्रीराम रावण का वध कर उनका उद्धार करेगें6 । लंका के महासागर के प्रारम्भ से पूर्व आयोजित सचिवों की सभा में लंकादहन के समय पवनपुत्र के शौर्य से परिचित हो चुकी राजसभा को सम्बोधित करते हुए लंकेश के सचिव वज्रदंष्ट्र ने सुग्रीव के बल की प्रशंसा करते हुए, शौय और पराक्रम की दृष्टि से श्री राम श्री लक्ष्मण के बाद वानरीश्वर सुग्रीव का ही नामोल्लेख किया था।7 आक्रमणकारी सुविशाल वानर सेना के लिये समुद्र तट पर सरलतापूर्वक खाद्य सामग्री एवं पानी की उपलबता के आधार पर स्थान का चयन कर वानरेन्द्र सुग्रीव ने अपने-अपने राजनीतिक कौशल का परिचय दिया था।8

रावण के गुप्तचर प्रमुख शुक द्वारा जिन वानर 'यूथयूथपों' तथा 'यूथापत्तियों' का उल्लेख किया गया है उनमें 'हरिपुंगव सुग्रीव, युवराज अंगद, जाम्बवान, नल और नील जैसे अन्तरंग सचिवों के अतिरिक्त श्वेत, कुमुद, चण्ड, रम्भ, शरभ, पनस, विनत, क्रोधन, गवय, हर, धूम्र, दम्भ, संनादन, क्रथन, प्रमाथी, गवाक्ष, केसरी तथा शतबलि के नाम उल्लेखनीय हैं।9 आयु की दृष्टि से वानरों के 'पितामह' के रूप में सुख्यात् संनादन के पश्चात् क्रमशः धूम्राक्ष, जाम्बवान तथा केसरी नामक तीनों भाईयों का स्थान है। मानवीय मर्यादाओं के मूर्तिमान स्वरूप प्रभु श्री राम ने अपने राजयाभिषेक के उपरान्त अतिथियों की बिदाई के समय इन सभी को प्रथम अभिवादन के साथ सत्कृत कर, मानवसमाज को वयोवृद्धजनों के प्रति हार्दिक सार्वजनिक सम्मान का उदाहरण प्रस्तुत किया था।10 भूमण्डल के समस्त वानर वंशीय मानवों के सर्वमान्य स्वामी या अधिपति थे रूपीश्वर सुग्रीव। अधोलिखित पंक्तियों में श्री राम प्रभु के अनन्य सखा इस परमवीर के लंका के महासमर में प्रदर्शित पराक्रम की झलक मात्र प्रस्तुत की गई है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

देवी सीता के अन्वेषणार्थ वानरों को भेजने से लेकर, लंकापति रावण के विरुद्ध प्रयाण से लेकर अपने जीवन के अन्त तक इस वानरपुंगव ने मित्रता के जिस उच्चादर्श का प्रस्तुतिकरण किया, उसकी तुलना विश्व इतिहास में अन्यत्र दुर्लभ है। अपने सच्चे मित्र के हितसाधन के निमित्त इस वनवासी वानराधीश्वर ने अपना सर्वस्व दाँव पर लगा दिया और अपने परमसखा के स्वर्गारोहण के समय उनके साथ ही जलसमाधि ले सबको अभिभूत कर दिया था।

तीनों लोगों के लिए आतंक बन चुके लंकाधिपति रावण के प्रलोभनपूर्ण प्रस्ताव को ठुकराते हुए इस अटूट मैत्री के प्रतिमान परमवीर ने प्रतिउत्तर में रावण को सचेत करते हुए कहा था- ''हे रावण! न तो तुम मेरे मित्र हो, न ही मेरे प्रति मैत्री या कृपा के भाव रखने वाले ही हो। मेरे मित्र श्री राम के प्रति घोर शत्रुता के कारण बाली की भाँति तुम भी वध करने योग्य हो। देवताओं के लिये भी दुर्लय श्री राम के प्रति अपना मैत्रीधर्म निभाते हुए वह लंकापुरी को भस्मात् करके ही वापस लौटेगें।''11

दक्षिण से सुदूर लंका से चलकर सुदूर उत्तर में महर्षि विश्वामित्र के सिद्धाश्रम (बक्सर-बिहार) तक आतंक का पर्याय बन चुके राक्षस योद्धा इस पराक्रमी वानराधिप के शौर्य से भलीभाँति परिचित थे, तभी रावण की युद्ध परिषद में उसके सचिव सलाहकारों में से एक वज्रदंष्ट्र ने महावीर हनुमान के पराक्रम से सुपरिचित राजसभा के सदस्यों सहित स्वयं लंकापति को सम्बोधित करते हुए कहा था, ''राम, सुग्रीव और लक्ष्मण के रहते वानरसेना में हनुमान की कोई गणना नहीं करना चाहिए।12 यही नहीं रावण के गुप्तचर प्रमुख शुक ने भी सभी वानरों के राजा सुग्रीव को महापराक्रमी बताया था।13 कपीन्द्र को अपने शारीरिक बल और मल्लयुद्ध में प्रवीणता पर पूरा विश्वास था। यही कारण है कि सुबेल पर्वत से श्री राम जब लंका का निरीक्षण कर रहे थे, तब रावण को देख कर यह अपना क्रोध नहीं रोक पाये थे। रावण के निकट सहसा पहुँच, मल्लयुद्ध में उसको बुरी तरह थका कर वह सकुशल प्रभु श्रीराम के पास लौट आये थे। परमोदार पुरुषोत्त अयोध्याधिपति ने इस दुस्साहस की पुनरावृत्ति न करने के लिए अपने मित्र वानरेश्वर को समझाया।14 अपनी भूल स्वीकार करते हुए इन्होंने श्री राघव से कहा था कि रावण को देख कर वह उसे क्षमा नहीं कर पाये थे।15 यही नहीं शारीरिक बल के आकार कुम्भकर्ण के साथ मल्लयुद्ध के दुस्साहिक कार्य में उसके द्वारा अपहृत कर लंका ले जाते समय वह मार्ग में ही उसकी नाक-कान और पसली को क्षतिग्रस्त कर स्वयं मुक्त हो सकुशल वापस लौट आए थे।16

यहाँ यह राजनीतिक तथ्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि सम्पूर्ण वानर सेना के प्रमुख सेनापति होने के कारण जहाँ श्रीराम तथा उनका अनुज होने के कारण लक्ष्मण जी की सुरक्षा महत्त्वपूर्ण थी, वहीं वानर साम्राज्य के अधीश्वर होने के कारण वानरेन्द्र सुग्रीव की सुरक्षा का तनिक भी कम महत्त्व नहीं था। यदि महासमर में वानरराज के साथ कोई अनहोनी हो जाती तो उसका निश्चित प्रतिकूल प्रभाव वानरसेना पर पड़ता। फिर भी इस पराक्रमी वानरराज ने रावण, मेधनाद एवं इन्द्रजित् जैसे योद्धाओं से एकाकी भिड़ने में कोई संकोच नहीं किया था। यही नहीं रणक्षेत्र में उनके द्वारा अनेक अग्रणी राक्षस सेनानियों का अन्त किया गया, जिनमें राक्षस सेनानी प्रघस, कुम्भकर्ण के

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

महाबल पुत्र कुम्भ, दुर्द्धर्ष सेनानी विरुपाक्ष एवं रावण तथा कुम्भकर्ण के मौसेर-सौतेले भाई पराक्रमी महोदर के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

लंका के महासंग्राम के प्रारम्भ में ही वानरयूथपतियों द्वारा जिन राक्षससेनानियों का वध किया गया, उनमें प्रजंघ तथा प्रघस के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। वानरेन्द्र सुग्रीव की ललकार पर वानर यूथपति सम्पात्ति द्वारा प्रजंघ के वध से कोपाकुल प्रघस ने वानर सेना का विनाश प्रारम्भ कर दिया था। यह रावणमातुल सुमाली का केतुमती से उत्पन्न पुत्र था।17 क्रोध के आवेश में वानर सैनिकों का वध करते हुए उसने महावीर वानराधिपति से टकराने की भयंकर भूल की थी। अनेक घात-प्रतिघात के बाद भी कपिराज को विशेष क्षति पहुँचाने मे असफल अन्ततः वह उनके द्वारा यमसदन पहुँचाया गया।18 यहाँ यह बता देना आवश्यक प्रतीत होता है कि यह प्रघस, प्रमदावन अथवा अशोकवाटिका उजाड़ने बजरंगबली हनुमान के हाथों मारे गये रावण के विरुपाक्ष, यूपाक्ष, दुर्धर, प्रघस और भासकर्ण नामक पाँच सेनापितयों में से एक से भिन्न था19 महाभारत में राक्षसराज समर्थक 'प्रघस' नामक राक्षसों और पिशाचों के दल का उल्लेख हुआ है।20

वानर अधिराज सुग्रीव द्वारा कुम्भकर्ण के पराक्रमी पुत्र कुम्भ का वध लंका के महासमर की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। काले मेघ के समान वर्ण वाले महाकाय और श्रेष्ठ धनुर्धर कुम्भ का रथ वासुकि नाग ध्वज चिन्हांकित था। अपने महापराक्रमी पिता के वध से अत्यन्त कुपित इस रणदुर्दम राक्षस सेनानी ने अपने अचूक लक्ष्यवेध के बल पर वानर युवराज अंगद सहित मैन्द और द्विविद नामक दुर्द्धर्ष वानर सेनापतियों को आहत कर दिया था। अपनी ओर ससैन्य अग्रसर जाम्बवान को भी उसने रोक देने में सफलता प्राप्त की थी। इन्द्रजीत मेधनाद के समान श्रेष्ठ धनुर्धर तथा राक्षसेन्द्र रावण तुल्य प्रतापी21 अपने पराक्रमपुञ्ज पिता के नाक, कान और पसलियों को क्षत-विक्षत करने वाले सर्ववानराज सुग्रीव को अपने प्रतिशोध का ग्रास बनाना चाहा। वानर सैनिकों का वध करते हुए वह वानरेन्द्र से जा टकराया था। भयंकर द्वंद्वयुद्ध के उपरन्त वानराधिराज सुग्रीव उसके महाविनाशक धनुष को तोड़कर दूर समुद्र में फेंक देने में सफल हुए थे। धनुषभंग के कारण हतमनोबल कुम्भ शीघ्र ही वानर-सर्वेश्वर सुग्रीव के हाथों अपना प्राणान्त करा बैठा था।22 अपने सहोदर के वध के उपरान्त निकुम्भ, कुम्भ के साथ युद्ध में क्रान्त हो चुके सुग्रीव की ओर बढ़ा किन्तु आगे बढ़ कर सुग्रीव सचिव पराक्रमपुञ्ज हनुमान ने उसको रोक कर संकटमोचक की भूमिका निभाई और मल्लयुद्ध में निकुम्भ को धराशायी कर उसके शिरस्त्राण और कुण्डकधारी शिरोभाग को उसके शरीर से पृथक कर दूर फेंक दिया था।23

युवराज इन्द्रजित् के वध के उपरान्त शोक संतप्त रावण के परिजन प्रमुख सेनापतियों में विरुपाक्ष, महापार्श्व तथा महोदर जैसे कुछ प्रमुख योद्धा ही शेष रह गये थे। इन्हीं को साथ लेकर लंकेश ने स्वयं बानरसेना के सर्वनाश का दृढ़ निश्चय किया था। उसके प्रतिशोध की भावना से विनष्ट हो रही पलायमान वानर सेना को स्थिर करने का दायित्व अपने बीरवर श्वसुर और कुशल वैद्यराज सुषेण को सौंप हरिपार्थिव सुग्रीव ने स्वयं ही रावण से जूझने का निर्णय लिया था। अनेक वानर यूथपों के साथ रावण की ओर अग्रसर वानरराज से रावण सेनानी विरुपाक्ष बीच ही में आ टकराया था। वानरों के भीषण प्रत्याक्रमण से आर्तनाद करती राक्षस सेना के मनोबल को

बढ़ाने के उद्देश्य से उसने रथ से उतर कर एक मत्त गजरात पर आरुढ़ होना आवश्यक समझा था। वानरराज पर गजारुढ़ विरुपाक्ष द्वारा बाण वर्षा करते देख राक्षस सेना को आर्तनाद रुक सा गया। उसके वाणप्रहार ने पहले से ही कुपित रावण की ओर बढ़ते हरीश्वर का क्रोध और अधिक बढ़ा दिया। युद्धनिपुण सुग्रीव के भीषण प्रहार से चिग्घाड़ता हुआ गजराज समरभूमि में धाराशायी होने को हुआ कि विरुपाक्ष उस पर कूद कर सुग्रीव पर चढ़ दौड़ा। उसके भीषण असि प्रहार से राजा सुग्रीव का कवच विदीर्ण हो गया और राक्षस सेनानी की तलवार उसमें फँस कर रह गई। उस तलवार को अपने हाथों से खींचने के लोभ में राक्षस सेनापति भयंकर आत्मघाती भूल कर बैठा। दोनों हाथों से अपनी तलवार खींच रहे विरुपाक्ष पर वानरराज ने ऐसा भीषण वाद-प्रहार किया कि आक्रमणकारी धपाक से धरती पर जा गिरा। बस फिर क्या था शक्तिशाली कपिराज कूद कर उसकी छाती पर जा बैठे और उसके वक्षस्थल और शिरोभाग पर तब तक भीषण मुष्ठि प्रहार करते रहे जब उसका शिरोभाग चूर-चूर नहीं हो गया। अपने अविरल बहती रक्तधार से पार्श्वभूमि को लाल करता विरुपाक्ष यमसदन पहुँच गया। समर भूमि एक साथ हुए राक्षसों के आर्तनाद एवं वानरों के हर्षनाद से निनादित हो उठा।24 महाभारत भी हरिपुंगव सुग्रीव द्वारा विरुपाक्ष के वध का समर्थन करता है।25 लंका समर में तीन विरुपाक्ष नामधारी सेनानियों में एक वध महावन् हनुमान द्वारा अशोक वाटिका में, दूसरे का वानर राजा सुग्रीव द्वारा और तीसरे का श्री रामानुज लक्ष्मण जी द्वारा किया गया।26 तीसरे को माल्यवान का पुत्र बताया गया है।

अपने महाबलशाली अनुज कुम्भकर्ण के वध का समाचार सुनकर रावण शोक से मूर्च्छित हो गया। रावण के पुत्रगण त्रिशिरा, देवान्तक, नरान्तक और अतिकाय फूट-फूट कर रोने लगे। अनायास ही महानकर्म करने वाले श्रीराम द्वारा भाई कुभकर्ण के मारे जाने पर उसके सौतेले भाई महोदर और महापार्श्व भी शोक से व्याकुल हो उठे थे-

> ''भ्रातरं निहत्तं श्रुत्वा रामेणाक्लिष्ट कर्मणा।
> महोदर महापार्श्वौ शोकाक्रान्तौ बभूवतुः।।''27

उल्लेखनीय है कि ये दोनों रावण की सगी मौसी पुष्पोत्कटा का ऋषि विश्रवा से उत्पन्न रावण के सौतेले/मौसेरे भाई थे।

लंका के इस महायुद्ध में दोनों पक्षों की सेनाओं के घात-प्रतिघात के महासंतान से ग्रीष्म-ऋतु के क्षीण होते दो महासरोवरों की भाँति राक्षस सेनाओं का मनोबल बढ़ाने हेतु लोकपीडक रावण जहाँ राक्षस योद्धाओं को ललकार रहा था, वहीं हरीन्द्र सुग्रीव अपने व्यक्तिगत शौय प्रदर्शन और भीमगर्जना से विरुपाक्ष के वध से आह्लादित वानरवीरों के बढ़े हुए उत्साह को द्विगुणित कर रहे थे। भग्रमनोबल राक्षसी सेनाओं के मध्य एममात्र आशा का आधार घोषित करते हुए रावण ने अपने सौतेले-मौसेरे भाई महोदर को श्रीराम, लक्ष्मण जी एवं वानरराज के वध का आदेश दिया था।

वानरसेना को विनष्ट कर आगे बढ़ते सहोदर को महाशूर सुग्रीव का सामना करना पड़ा। दोनों के मध्य चले भयंकर तुमुल संग्राम में वानर राज ने समरभूमि में पड़े एक परिघ को उठा उसके प्रहार से महोदर के रथ के

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अश्वों का वध कर डाला। तदूपरान्त वानर महाराज ने उसी परिघ से महोदर पर प्रहार किया किन्तु राक्षस सेनानी ने अपनी गदा से उस भीषण प्रहार को रोक लिया। परिणामस्वरूप गदा और परिघ दोनों खण्डित हो गये। इसके पश्चात् मूसलधारी वानरराज तथा नई गदा धारण करने वाले रावण सेनानी में पुनः द्वन्द्व प्रारम्भ हो गया। परिणामस्वरूप गदा और शूल दोनों खण्डित हो गये। युद्धकुशल महाराज सुग्रीव को पीछे हटते न देख कोपाकुल महोदर असिधारण कर उन पर झपटा। उसको असिधारण करते देख सूर्यपुत्र सुग्रीव ने भी अपने हाथों में खड्ग ले लिया। दोनों के घात-प्रतिघात में महोदर वानराधीश्वर पर भीषण असि प्रहार कर उनके कवच को विदीर्ण करने में सफल हुआ। यह तो वानरराज की चपलता ही थी कि उन्होंने विधुत्गति से पीछे हट अपने वक्षस्थल को विदीर्ण होने से बँचा लिया था। किन्तु महोदर की तलवार कपिराज के कवच में फँस कर रह गई थी। अपनी तलवार को दोनों हाथों से कवच से बाहर खींच पुनः प्रहार के उद्देश्य से महोदर भयंकर आत्मघाती भूल कर बैठा। अवसर का लाभ उठा वानर महावीर ने अपने एक ही खड्ग प्रहार से महोदर के शिरस्त्राण और रत्नजटित कुण्डलधारी शिर को भू लुण्ठित कर दिया। कपीन्द्र के इस दुस्साहसिक सुकृत्य ने देवताओं, यक्षों, गंधर्वों तथा किन्नरों को हर्षित कर दिया। महोदर के मरते ही राक्षसी सेना लंका की ओर भाग चली।28 पुराणों में भी रावण के इस सौतेले भाई का उल्लेख हुआ है।29 यहाँ पर स्मरणीय है कि जिस सर्ववानरराज पर सम्पूर्ण वानरसेना के सफल संचालन, अनुशासन, रणनीति निर्धारण का दायित्व था, उस वानरसम्राट के द्वारा इन महावीर राक्षसों का वध तथा लंकेश रावण, महाबली कुम्भकर्ण तथा इन्द्रजित जैसे द्वर्द्धर्ष और मायावी राक्षसों से द्वन्द्वयुद्ध में स्वयं को सुरखित बँचा लेना उनके शौर्य, शारीरिक बल तथा युद्धकौशल का जीवन्त प्रमाण है। यही नहीं यह वानरराज का राजनीतिक चातुर्य्य ही था कि उन्होंने श्री राम को वानरसेना का सर्वोच्च सेनापति घोषित किया था। समुद्रसंतरण के लिए निर्मित रामसेतु से वानर सेना के लिये लंका को प्रयाण के समय श्रीराम को अपने सर्वाधिक विश्वस्त सचिव हनुमान तथा श्री रामानुज को युवराज अंगद के कन्धे पर बिठा कर दोनों के प्रति अपने आगाध विश्वास और पूर्णनिष्ठा का अतिरिक्त प्रमाण सार्वजननिक कर दिया था।

अनुज सहित प्रभु श्रीराम के प्रति अपनी अटूट निष्ठा का प्रमाण देते हुए ही उन्होंने समरभूमि में राघवयुगल के मूर्च्छित होने पर, विभीषण को आश्वस्त करते हुए अपने श्वसुर सुषेण को वानर सैनिकों के संरक्षण में उपचारार्थ किष्किन्धा ले जाने का आदेश देते हुए रावण का वध कर लंकापुरी को अग्निसात् करने का अपना दृढसंकल्प प्रकट किया था।30

मानवीय मर्यादाओं और आदर्शों के मूर्तिमान स्वरूप रघुकुलभूषण श्री राम भला कहाँ पीछे रहने वाले थे। उन्होंने भारत सहित अपने परिजनों की कौन कहे, समस्त पुरवासियों को भी लंका विजयोपरान्त अवधपुरी में प्रवेश करते समय विशालकाय गजराज पर आरुढ़ सुग्रीव के प्रति जनसामान्य के समक्ष बार-बार अपने मित्र सुग्रीव के प्रति अपनी हार्दिक प्रीति को प्रकट करने में संकोच नहीं किया।31 राघवेन्द्र ने सुग्रीव एवं उनकी पत्नियों के अयोध्या प्रवास के समय न केवल अपना सुरम्य, सुसज्जित अशोकवाटिका से घिरे अपने भवन को प्रदान किया था, वरन् उनके प्रिय अनुज भरत जी स्वयं वानराधिपति को उस भवन तक ले गये थे।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सर्ववानर राज के लिये वाल्मीकीय रामायण, महाभारत एवं परवर्ती संस्कृत ग्रन्थों में अंकित सम्बोधनों- हरिन्द्र, हरीश, कपिपुंगव, वानरेन्द्र, कपिराज, कपीश्वर, हरीश्वर, वानराधिप, सर्वशाखा मृगेन्द्र आदि ने बहुत से लोगों को मल्लयुद्ध विशारद, गदायुद्ध विशेषज्ञ, गदा आदि के सहित शूल, खड्ग परिघ आदि के चालन में कुशल वानर नामधारी आर्येतर वनवासियों को, सामान्य बन्दर पशु मानने को प्रेरित किया है जो सर्वथा अनैतिहासिक और असत्य है। उल्लेखनीय है कि विश्वयुद्ध में चपलता प्रदर्शन के कारण जापानियों को 'येलो मंकी' (पीला बन्दर), भीषण युद्ध क्षमता के कारण रूसियों कोरसियन बीअर (रुसी भालू) तथा आमने सामने के युद्ध में सन्नद्ध अँग्रेजों 'जानबुल' (श्रीमान बैल) कहा गया था।

सन्दर्भ-सूची-

वा0 रा0, किष्किन्धा0 सर्ग 46
वा0 रा0, किष्किन्धा0 सर्ग 46
उत्तर0 36/36-30
वन0 84/147
ब्रह्माण्ड0 3/7/134-148 एवं भागवत0 9/10/12
''रामस्य च सखा देवि सुग्रीवो नाम वानरः...... अहं संग्रीव सचिवो हनुमन्नाम वानरः।
सुन्दर0 34/36-40
युद्ध0 8/10
युद्ध0 22/88
युद्धकाण्ड0 26 वाँ सर्ग
उत्तर0 सर्ग 39 वाँ
युद्ध 20/23-24
युद्ध0 सर्ग 8 श्लोक 9
''सर्ववानराजं च सुग्रीवं भीमविक्रमम्'' - युद्ध0 29/2
युद्ध0 40/7-30 एवं सर्ग 41 श्लोक 1-7
वही 41/6-8
युद्ध0 67/83-89
उत्तर0 5/38-41
युद्ध0 43/25
सुन्दर0 46 वाँ सर्ग एवं रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड
वन0 145/1-2
धनुषीन्द्रजितस्य तुल्य, प्रतापे रावणश्च.......युद्ध0 76/78
युद्ध0 76/63-93
युद्ध0 77/21-23
युद्ध0 96/36
वन0 285/9
युद्ध0 42/26
युद्ध0 68/7
युद्ध0 सर्ग 97
ब्रह्माण्ड0 2/8/55 तथा वायु0 70/49
युद्धकाण्ड, सर्ग 22
युद्ध0 128/39

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies